बच्चा बिस्तर गीला करे, तो गले का इलाज कराइए

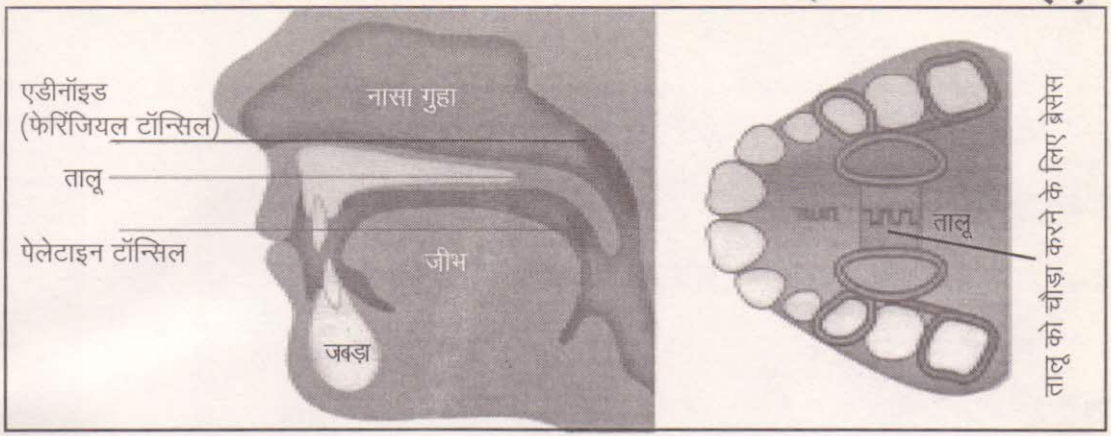

सिडनी के एक दंत चिकित्सक जल्दी ही बच्चों के बिस्तर गीला करने की आदत के एक विचित्र इलाज की जांच करने जा रहे हैं और उनके अलावा बहुत कम लोगों को यकीन है कि इस आदत का सम्बंध सांस की दिक्कत से हो सकता है।

सोते-सोते पेशाब करने और सांस लेने में दिक्कत के बीच कुछ सम्बंध है, ऐसा लगता है। इस बाबत कोई व्यवस्थित प्रयोग तो नहीं हुए हैं मगर विभिन्न आंकड़ों से यह आभास मिलता है।

मसलन, 2001 में एक अध्ययन हुआ था। टॉन्सिल या एडिनॉइड ग्रंथि की समस्या से पीड़ित 321 बच्चों पर यह अध्ययन किया गया था। टॉन्सिल का ऑपरेशन करने से पहले इनमें से करीब एक तिहाई बच्चे बिस्तर गीला करते थे। ऑपरेशन के बाद इनमें 63 प्रतिशत की यह आदत छूट गई थी। इसी तरह के अन्य अध्ययनों से भी ऐसी ही नतीजे सामने आए हैं।

सिडनी के दंत चिकित्सक डेरेक महोनी का मत है कि वास्तव में समस्या की जड़ एडिनॉइड या टॉन्सिल नहीं बल्कि संकरा तालू है। महोनी का विचार है कि यदि तालू बहुत संकरा हो तो जीभ थोड़ी पीछे की ओर रहती है और कभी-कभी सांस-मार्ग को बंद कर देती है। नींद के दौरान ऐसा होने की संभावना ज़्यादा रहती है। महोनी बताते हैं कि सिडनी के प्रिंस ऑफ वेल्स अस्पताल में जिन बच्चों को बिस्तर गीला करने की आदत के कारण उनके पास भेजा जाता है, ऐसे 10 में से 8 बच्चों का तालू संकरा होता है।

ऐसे मामलों में तालू को चौड़ा करने के लिए ब्रेसेस जैसे उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। स्वीडन में किए गए एक अध्ययन में पता चला कि अन्य सारे उपचार नाकाम होने के बाद जिन बच्चों पर यह तकनीक आज़माई गई उनमें 70 प्रतिशत की स्थिति में सुधार आया। 40 प्रतिशत की आदत तो पूरी तरह समाप्त हो गई। एक ब्रिटिश अध्ययन में तो नतीजे 100 फीसदी रहे।

यह कोई नहीं जानता कि सांस की दिक्कत और नींद में पेशाब आने के बीच क्या सम्बंध है। एक मत यह है कि सांस की दिक्कत से पेट में दबाव बनता है जिसकी वजह से पेशाब छूट जाती है। एक अन्य मत यह है कि सांस की दिक्कत के कारण खून में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। इसके कारण कुछ ऐसे हॉर्मोन्स की मात्रा बढ़ जाती है जो पेशाब की मात्रा बढ़ाते हैं।

कारण जो भी हो मगर एक बात तय है। अब तक हम बिस्तर गीला करने का सम्बंध तमाम बातों से जोड़ते रहे हैं। जैसे यह माना जाता है कि बहुत ज़्यादा पानी या अन्य तरल पदार्थ पीने से रात को पेशाब आती है। कभी-कभी इसे मनोवैज्ञानिक समस्याओं से भी जोड़ा जाता है। इसके लिए डेस्मोप्रेसिन नाम की दवा दी जाती है जो पेशाब का बनना रोकती है।

अलबत्ता अब लगता है कि ऐसे बच्चों के गले व नाक की जांच की जानी चाहिए। और यह जानना भी ज़रूरी है कि वास्तविक कारण क्या है। क्योंकि यदि सांस की दिक्कत के कारण ऐसा हो रहा है तो यह किसी ज़्यादा गंभीर समस्या का लक्षण भी हो सकता है। महोनी अब एक व्यवस्थित अध्ययन की योजना बना रहे हैं। वे तालू को चौड़ा करने वाले उपकरण के असर को सतर्कता से परखने जा रहे हैं। इसके परिणाम अवश्य ही उपयोगी रहेंगे क्योंकि एक अनुमान के मुताबिक 10 में से 1 बच्चा इस आदत से परेशान होता व करता है।

(स्रोत फीचर्स)